# UGC NET Paper=2.... Sanskrit

Filler Form

YouTube

## 🎯JRF का जलवा 🔥🏆

## दर्शन - साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

UNIT=4

Daily = 6 pm

Class-33

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

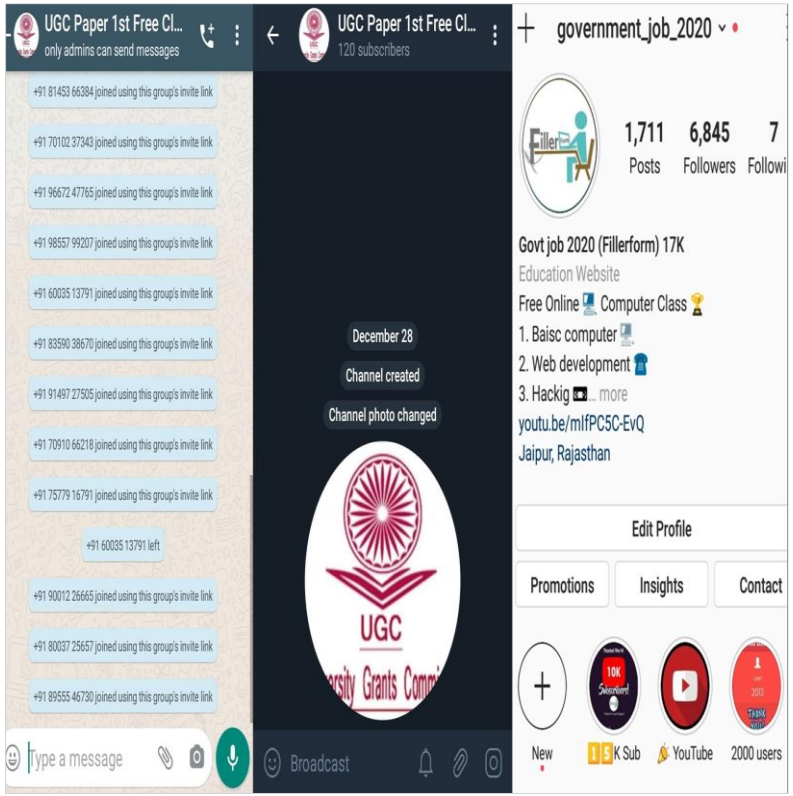
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
government_job_2020
1,711 Posts
6,845 Followers
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
December 28
Channel created
Channel photo changed
Type a message
Broadcast
New
K Sub
YouTube
2000 users

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

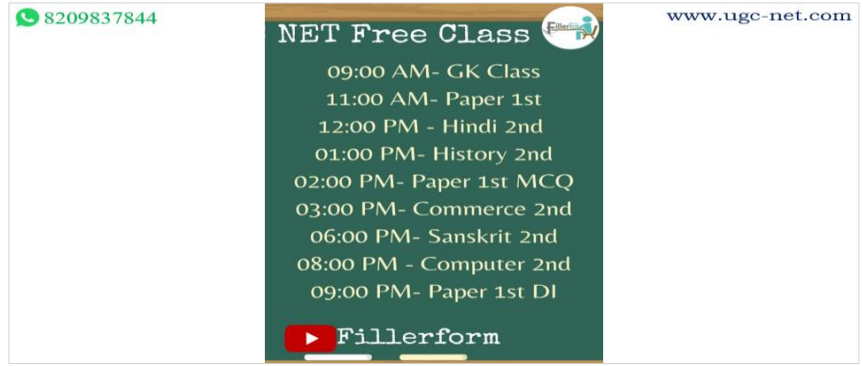
8209837844
NET Free Class
www.ugc-net.com
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
08:00 PM - Computer 2nd
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

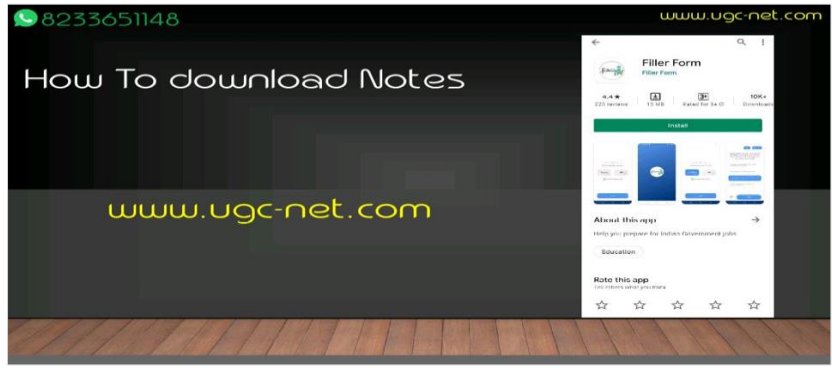
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

UGC NET PAPER = SANSKRIT...
JRF का जलवा
13th march 2022
Google Meet
Time = 6 pm
NIDHU CHAUDHARY
B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

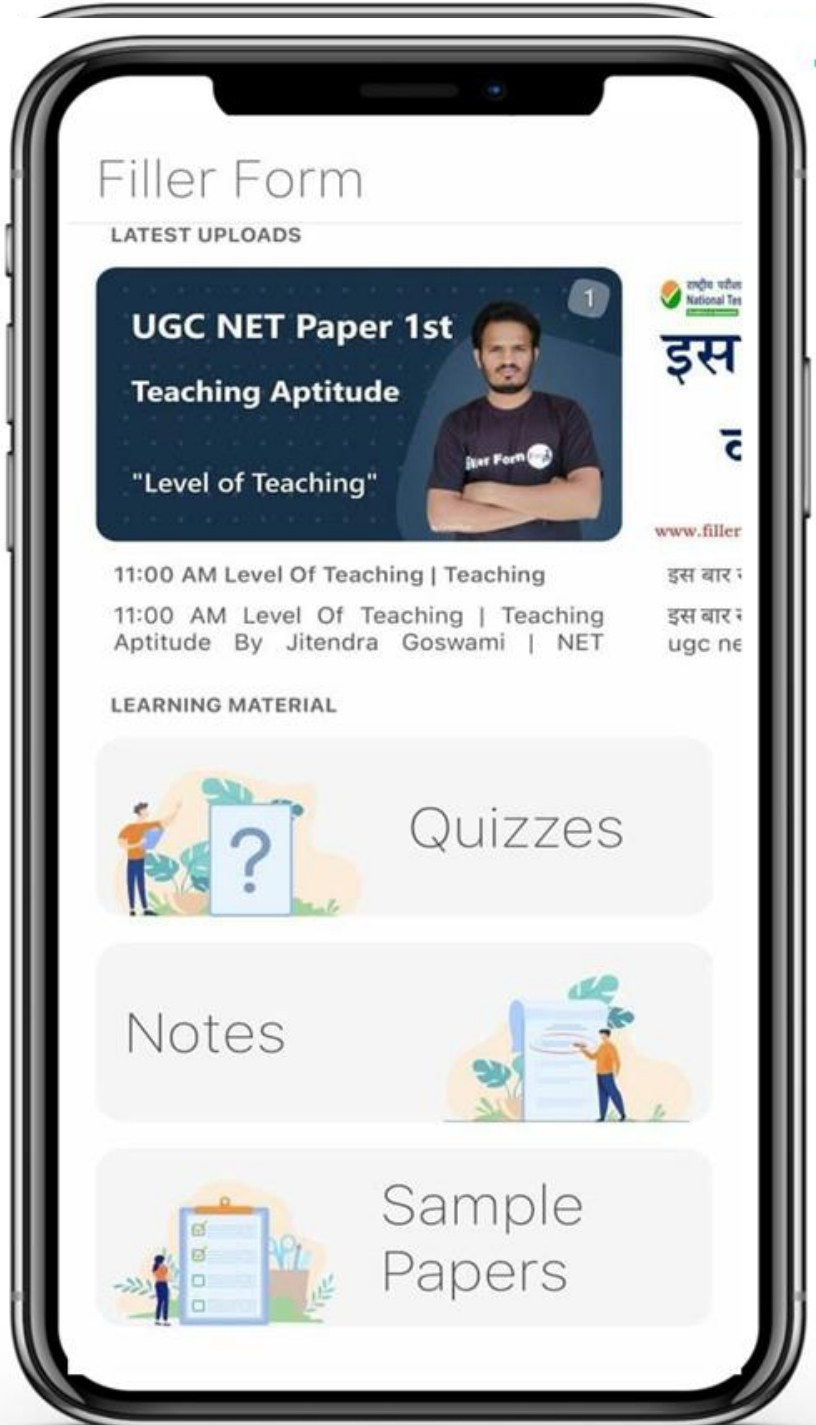


# UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

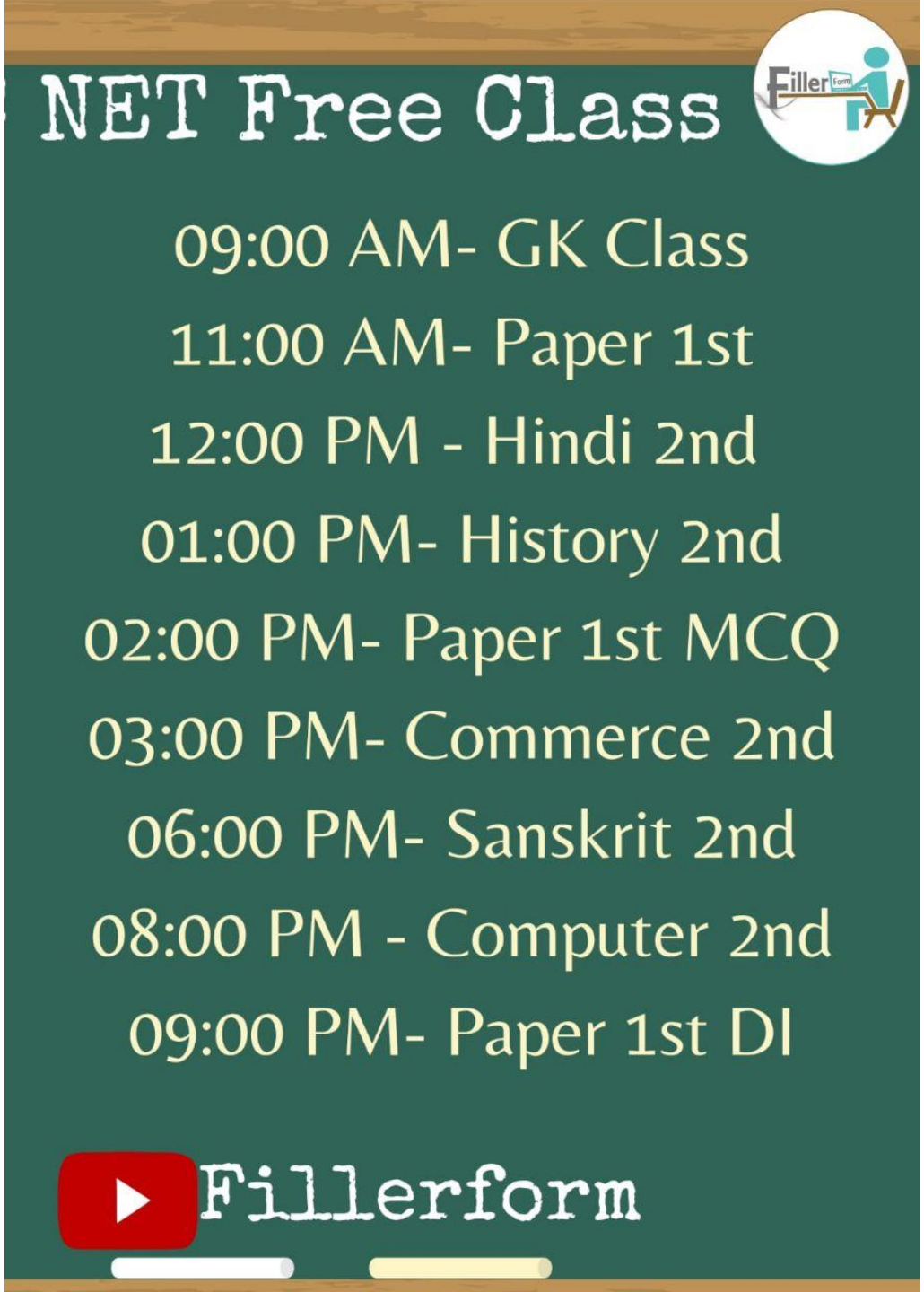

8233651148

www.ugc-net.com

# How To download Notes

www.ugc-net.com

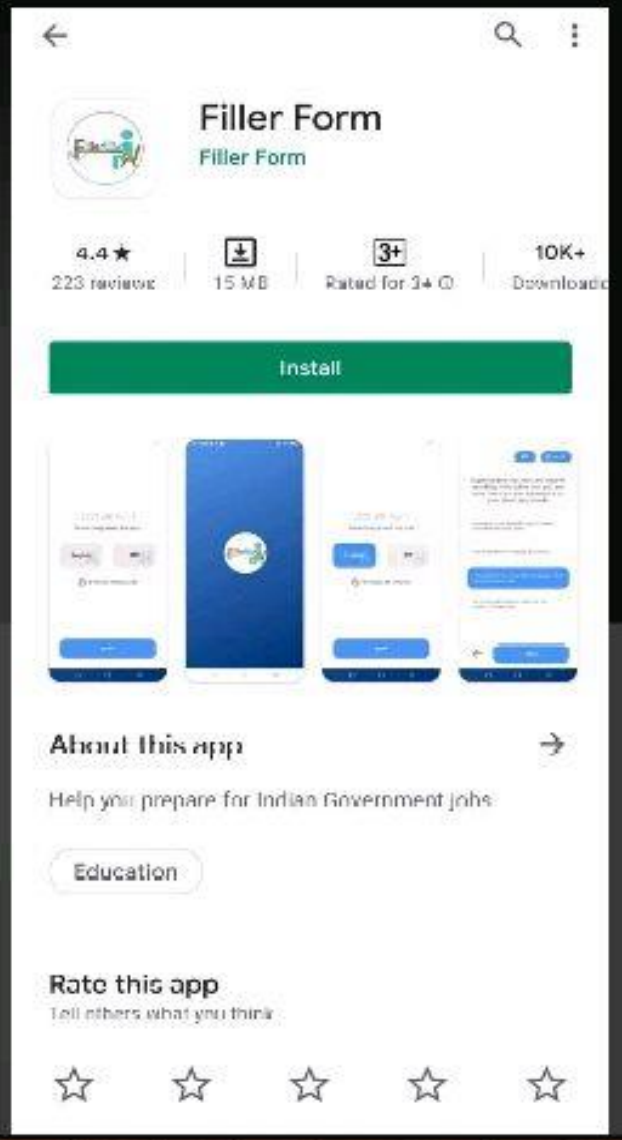

# UGC NET PAPER = SANSKRIT...

🎯 JRF का जलवा 🔥 🏆

13th march
2022

Time =
6 pm

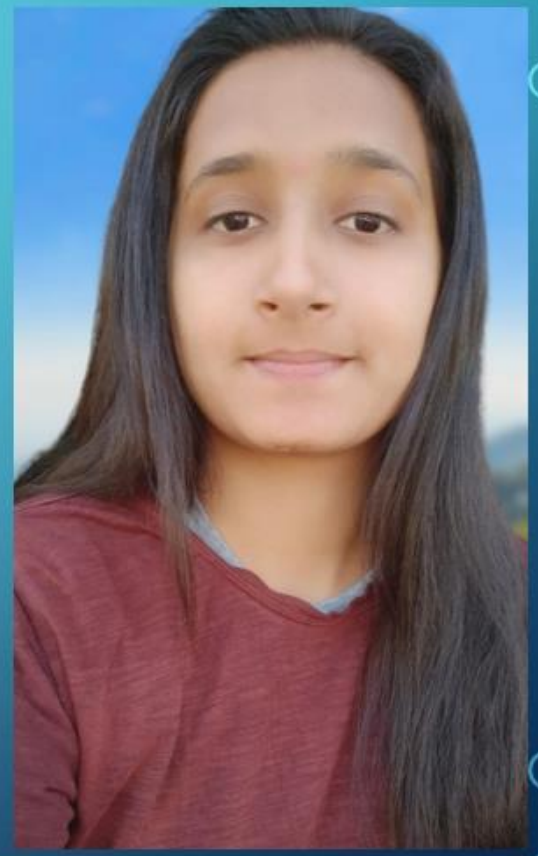

Google Meet



**NIDHU CHAUDHARY**

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

# Home work Answer.....

5. गन्धवत्त्वं कस्य लक्षणम् -

(A) पृथिव्याः (B) दिशः

(C) जलस्य (D) वायोः

6. उपमितिकरणं किम् ?

(A) इन्द्रियम् (B) पदज्ञानम्

(C) व्याप्तिज्ञानम् (D) सादृश्यज्ञानम्

# Today's Topic...

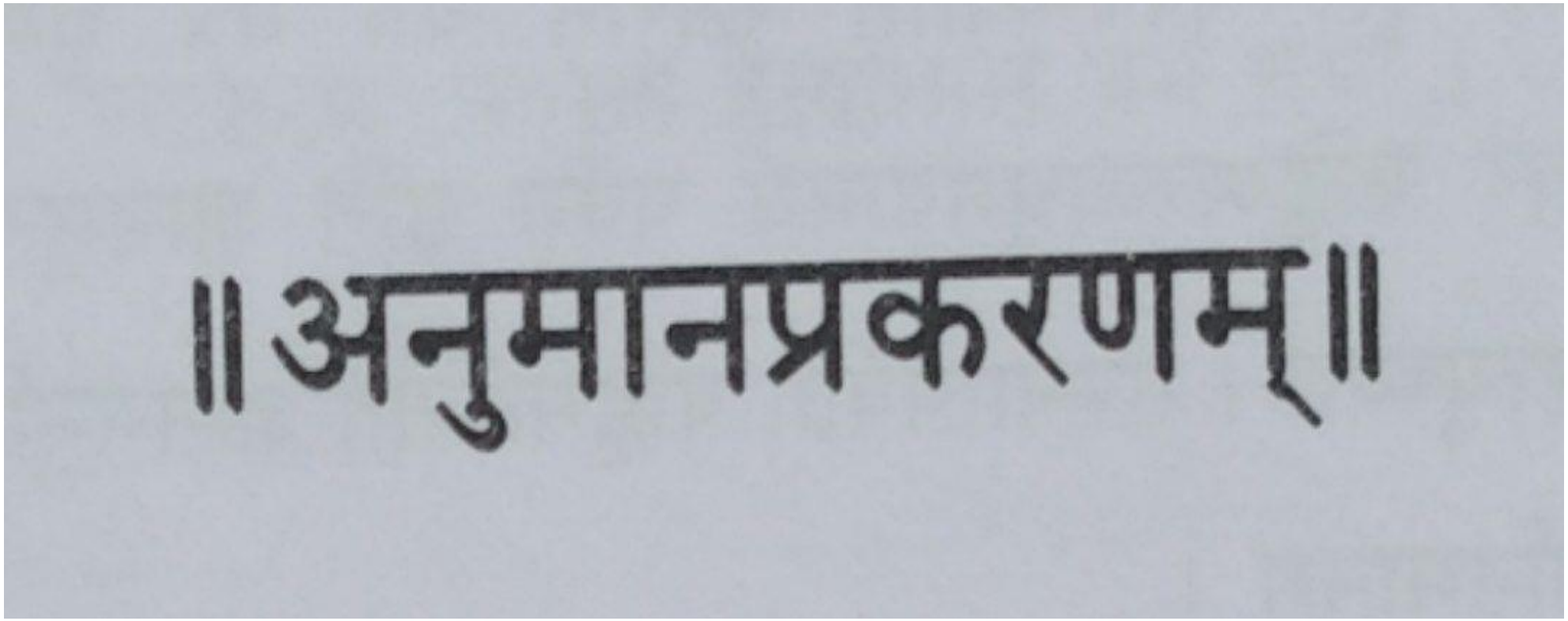

8209837844 www.ugc-net.com

# ॥अनुमानप्रकरणम्॥

**अनुमानम्-**

**'अनुमितिकरणमनुमानम्'।**

**अर्थ-** अनुमिति के करण (असाधारण कारण) को अनुमान कहते है।

**अनुमितिः-**

**'परामर्शजन्यं ज्ञानमनुमितिः'।**

**अर्थ-** परामर्श से जन्य (उत्पन्न) ज्ञान को अनुमिति कहते है ।

8209837844 www.ugc-net.com

**परामर्शः-**

**'व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः'। यथा-** वह्निव्याप्यधूमवानयं पर्वत इति ज्ञानं परामर्शः । तज्जन्यं पर्वतो वह्निमानिति ज्ञानमनुमितिः । **अर्थ-** व्याप्ति से विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान को परामर्श कहते है । **जैसे-** वह्नि का व्याप्य धूम वाला पर्वत है ऐसे ज्ञान को परामर्श कहा जाता है । उस परामर्श उत्पन्न पर्वत अग्नि वाला है इस प्रकार का ज्ञान अनुमिति है।

8209837844 www.ugc-net.com

**व्याप्तिः-**

**'यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निरिति साहचर्यनियमो व्याप्तिः'।**

**अर्थ-** जहां-जहां धूम है वहां-वहां अग्नि है इस प्रकार हेतुभूत धूम आदि और साध्यभूत अग्नि आदि के साहचर्य को व्याप्ति कहते है ।

**साध्य-** जिसका अनुमान के द्वारा निर्णय किया जाता है उसे साध्य कहते है।

**हेतु-** जिसके ज्ञान से साध्य का निश्चय होता है उसे हेतु कहते है।

8209837844 www.ugc-net.com

## पक्षधर्मता-

**'व्याप्यस्य पर्वतादिवृत्तित्वं पक्षधर्मता' ॥**

**अर्थ-** अग्नि आदि की व्याप्ति से युक्त व्याप्य अर्थात् धूम आदि के पक्षभूत पर्वत आदि में रहने को पक्षधर्मता कहते है।

**अनुमानं द्विविधं- स्वार्थं परार्थं च ।**

**अर्थ-** अनुमान दो प्रकार का होता है- 1. स्वार्थानुमान और परार्थानुमान ।

8209837844

www.ugc-net.com

## 1. स्वार्थानुमानम्

**'तत्र स्वार्थं स्वानुमितिहेतुः'**। तथाहि स्वयमेव भूयोदर्शनेन यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निरिति महानसादौ व्याप्तिं गृहीत्वा पर्वतसमीपं गतः तद्गते चाग्नौ सन्दिहानः पर्वते धूमं पश्यन्व्याप्तिं स्मरति यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निरिति । तदनन्तरं वह्निव्याप्यधूमवानयं पर्वत इति ज्ञानमुत्पद्यते अयमेव लिंगपरामर्श इत्युच्यते । तस्मात्पर्वतो वह्निमानिति ज्ञानमनुमितिः उत्पद्यते । तदेतत्स्वार्थानुमानम् ।

**अर्थ-** उन दो अनुमानों के बीच में अपने अनुमितिज्ञान के हेतु को स्वर्थानुमान कहते है। जैसे स्वयं ही बार-बार धूम और अग्नि का साहचर्य देखने से जहां-जहां धूम है वहां-वहां अग्नि अवश्य है इस रसोईघर आदि में व्याप्ति को जानकर कोई व्यक्ति कदाचित् पर्वत के समीप गया। वहां पर स्थित अग्नि की आशंका करता हुआ- पर्वत में धुँआ देखकर व्याप्ति का स्मरण करता है कि जहां-जहां धूम है वहां-वहां अग्नि अवश्य है। उसके बाद अग्नि की व्याप्ति का आश्रय धूम वाला यह पर्वत है ऐसा उसे ज्ञान उत्पन्न होता है। इसी को लिंगपरामर्श कहते हैं। उस परामर्श से पर्वत अग्नि वाला है ऐसा अनुमिति ज्ञान उस व्यक्ति को हो जाता है। इस प्रकार की अनुमितिज्ञान को स्वार्थानुमान कहते है।

8209837844

www.ugc-net.com

## 2. परार्थानुमानम्

**'यत्तु स्वयं धूमादग्निमनुमाय परंप्रतिबोधयितुं पञ्चावयव वाक्यं प्रयुज्यते तत्परार्थानुमानम्'** । **यथा-** 1. पर्वतो वह्निमान् 2. धूमवत्वाद् 3. यो यो धूमवान् स स वह्निमान् यथा महानसम् 4. तथा चायं 5. तस्मात्तथेति । अनेन प्रतिपादिताल्लिङ्गात्परोऽप्यग्निं प्रतिपद्यते ॥

**अर्थ-** जो स्वयं धूम से अग्नि का अनुमान करके दूसरे को समझाने के लिये उसके द्वारा पांच अवयवों वाले वाक्य का प्रयोग किया जाता है, उसे परार्थानुमान कहते है । **जैसे-** 1. पर्वत अग्नि वाला है, 2. धूम वाला होने से, 3. जो-जो धूम वाला होता है वह अग्नि वाला होता है जैसे कि रसोईघर, 4. वैसे ही यह पर्वत है (धूम वाला है), 5. अतः यह पर्वत अग्नि वाला है। इन पांच अवयवों से युक्त वाक्यों से पतिपादित लिंग (हेतुरुप धूम) से अन्य व्यक्ति भी धूम से अग्नि को जान पाता है।

### पञ्चावयवाः-

**'प्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनानि पञ्चावयवाः'** ।

'पर्वतो वह्निमानिति **प्रतिज्ञा**' । धूमवत्वादिति **हेतुः** । यो यो धूमवान्स स वह्निमान्यथा महानसम् । तथा चायमित्युपनयः । तस्मात्तथेति **निगमनम्**॥

**अर्थ-** प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन, ये पञ्चावयव वाक्य हैं।

8209837844 ugc-net.com

1. **पर्वतो वह्निमानिति प्रतिज्ञा-** पर्वत अग्नि वाला है यह प्रतिज्ञा वाक्यहै।
2. **धूमवत्वादिति हेतुः-** धूमवाला होने के कारण यह हेतु वाक्य है।
3. **यो यो धूमवान्स स वह्निमान्यथा महानसम्-** जो-जो धूम वाला होता है वह अग्नि से युक्त होता है जैसे रसोईघर यह उदाहरण वाक्य है।
4. **तथा चायमित्युपनयः-** उसी तरह यह पर्वत भी वह्निव्याप्य धूम वाला है। यह उपनय वाक्य है।
5. **तस्मात्तथेति निगमनम्-** अतः पर्वत भी अग्नि वाला है यह निगमन वाक्य है।

**स्वार्थानुमितिपरार्थानुमित्योः लिंगपरामर्श एव करणम् ।तस्मात् लिंगपरामर्शोऽनुमानम् ॥**

**अर्थ-** स्वार्थानुमिति और परार्थानुमिति इन दोनों का 'लिंगपरामर्श' ही करण होता है । इसलिये लिंगपरामर्श ही अनुमान है ।

8209837844

www.ugc-net.com

## लिङ्गं त्रिविधम् –

1.अन्वयव्यतिरेकि 2. केवलान्वयि 3. केवलव्यतिरेकि चेति ।

**1.अन्वयव्यतिरेकि-** **'अन्वयेन व्यतिरेकेण च व्याप्तिमद् अन्वयव्यतिरेकि'। यथा-** 'वह्नौ साध्ये धूमवत्त्वम्'।

**अर्थ-** अन्वय और व्यतिरेक से जहां व्याप्ति रहती है उस लिंग को अन्वयव्यतिरेकि कहते है। **जैसे-** कि अग्नि के साध्य में धूम का रहना।

**अन्वयव्याप्ति- 'यत्र धूमस्तत्राग्निर्यथा महानसं इत्यन्वयव्याप्तिः'।**

**अर्थ-** जहां पर धूम है वहां पर अग्नि रहती है यह अन्वयव्याप्ति है।

**व्यप्तिरेकव्याप्तिः- 'यत्र वह्निर्नास्ति तत्र धूमोऽपि नास्ति यथा महाह्रद इति व्यप्तिरेकव्याप्तिः'** ।

**अर्थ-** जहां पर अग्नि नहीं है वहां पर धूम भी नही है यह व्यतिरेकव्याप्ति है । इस तरह यहां पर अन्वयव्याप्ति भी घटती है और व्यतिरेकव्याप्ति भी अतः इसे अन्वयव्यतिरेकि लिंग माना जाता है।

82098378

ugc-net.com

2. **केवलान्वयि-** 'अन्वयमात्रव्याप्तिकं केवलान्वयि' । **यथा-** 'घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्पटवत्' । अत्र प्रमेयत्वाभिधेयत्वयोः व्यतिरेकव्याप्तिर्नास्ति सर्वस्यापि प्रमेयत्वादभिधेयत्वाच्च ।

**अर्थ-** जहां पर केवल अन्वयव्याप्ति रहती है उस लिंग को केवलान्वयि कहते है । **जैसे- 'घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्पटवत्'** ।

**पक्ष-** घट, **साध्य-** अभिधेयत्व, **साधन-** प्रमेयत्व, **उदाहरण-** पट ।

'घट अभिधेय (वाच्य) है प्रमेय (यथार्थज्ञान का विषय) होने के कारण पट की तरह' । यहां पर प्रमेयत्व और अभिधेयत्व केवल अन्वयव्याप्ति है अर्थात् इसकी व्यतिरेक व्याप्ति नहीं बनती क्योंकि संसार के सकल पदार्थों में प्रमेयत्व और अभिधेयत्व रहता ही है।

8209837844

w.ugc-net.com

**3. केवलव्यतिरेकि-** 'व्यतिरेकमात्रव्याप्तिकं केवलव्यतिरेकि'। यथा- 'पृथिवीतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्त्वात्' । यदितरेभ्यो न भिद्यते न तद्गन्धवद्यथा जलम् । न चेयं तथा । तस्मान्न तथेति । अत्र यद्गन्धवत्तदितरभिन्नमित्य-न्वयदृष्टान्तो नास्ति पृथिवीमात्रस्य पक्षत्वात् ॥

**अर्थ-** केवल व्यतिरेकिव्याप्ति वाले हेतु को केवलव्यतिरेकि कहते है। **जैसे- 'पृथिवीतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्त्वात्'** ।

**पक्ष-** पृथिवी, **साध्य-** इतरभेदत्त्व, **साधन-** गन्धवत्त्व,

'पृथिवी अपने से इतर से भिन्न है, गन्धवती होने के कारण' । जो इतर से भिन्न नही है वह गन्ध वाला नहीं है, जैसे- जल। यह पृथिवी जल के समान गन्ध रहित नही है । अतः पृथिवी वैसी (इतर पदार्थ के समान) गन्धहीन नहीं है, अपितु गन्ध वाली है। यहां पर जो गन्ध वाली है वह इतर भिन्न है। ऐसा अन्वय का दृष्टान्त नहीं बन पाता है। यहां पर पृथिवी मात्र पक्ष है।

82098378 gc-net.com

**पक्षः-** 'सन्दिग्धसाध्यवान्पक्षः' । **यथा-** धूमवत्त्वे हेतौ पर्वतः ।

**अर्थ-** जहां पर साध्य (अग्नि आदि का) सन्देह हो, उसे पक्ष कहते है।

**जैसे-** धूमवत्व हेतु में 'पर्वत' पक्ष है।

**सपक्षः-** 'निश्चितसाध्यवान्सपक्षः' । **यथा-** तत्रैव महानसम् ।

**अर्थ-** जहां पर साध्य (अग्नि आदि का) निश्चय हो उसे सपक्ष कहते है।

**जैसे-** धूमवत्त्व हेतु में महानस सपक्ष है।

**विपक्षः-** 'निश्चितसाध्याऽभाववान्विपक्षः' । **यथा-** तत्रैव महाह्रदः ।

**अर्थ-** जहां पर साध्य (अग्नि आदि का) अभाव निश्चय हो उसे विपक्ष कहते है। **जैसे-** धूमवत्त्व हेतु में महाह्रद विपक्ष है।

# Next class....

✵ हेत्वाभास ✵

# Home work Question....

18. तर्कसङ्ग्रहानुसारं प्रमाणानि सन्ति -

(A) त्रीणि (B) चत्वारि

(C) पञ्च (D) षट्

19. 'प्रमा' इत्युच्यमाने अधोलिखितेषु कस्य निरसनं भवति ?

(A) प्रमितिः (B) अनुमितिः

(C) स्मृतिः (D) उपमितिः

# FEEDBACK

- आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

# For More Information....

**www.ugc-net.com**

**/Fillerform**

**/Fillerform**

**/Fillerform**

**info@fillerform.com**

8209837844

जिसने भी खुद को खर्च किया है,
DUNIYA ने उसी को GOOGLE पर SEARCH किया है।।
www.fillerform.com
fillerform
2

THANK YOU